समाज मनोविज्ञान की प्रकृति या स्वरूप
(NATURE OF SOCIAL PSYCHOLOGY)

समाज मनोविज्ञान मनोविज्ञान की ही एक शाखा है। चूँकि मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में अध्ययन किया जाता है। इसलिए इसका स्वरूप भी वैज्ञानिक है। जेसा कि **जे. एच. स्प्राउट** ने कहा है कि समाज मनोविज्ञान

का सम्बन्ध उन रूपों से है जिनमें एक व्यक्ति का आचार और विन्यास अन्य लोगों के आचार और विन्यासों से प्रभावित होता है। इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि समाज मनोविज्ञान एक विज्ञान है, किन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यह किस प्रकार का विज्ञान है? इसके लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि विज्ञान क्या है?

किसी विषय को विज्ञान की श्रेणी में रखने के लिए उसमें निम्नलिखित छः बातों का होना आवश्यक है–

1. **वैज्ञानिक पद्धति** (Scientific Method)–किसी विषय को उसकी विषय सामग्री के कारण नहीं वैज्ञानिक पद्धति के कारण विज्ञान कहा जाता है।

2. **कार्यकारण सम्बन्धों की खोज** (Discovery of Cause Effect Relationship)–विज्ञान अपनी विषय सामग्री में कार्य कारण के सम्बन्धों की खोज करता है।

3. **सार्वभौम** (Universal)–यह माना गया है कि वैज्ञानिक सिद्धान्त सार्वभौम होते हैं। वे सभी देशों में तथा कालों में खरे उतरते हैं।

4. **तथ्यात्मक** (Factual)–विज्ञान तथ्यों का अध्ययन है। इसकी विषय-सामग्री तथ्य होते हैं, यह यथार्थ सत्यों की खोज करते हैं।

5. **प्रामाणिक** (Verifiable)–वैज्ञानिक नियम प्रामाणिक होते हैं उनकी प्रामाणिकता की कभी भी जाँच की जा सकती है।

6. **भविष्यवाणी** (Forecast)–कार्यकारण सम्बन्धों के बारे में सार्वभौम और प्रामाणिक नियमों के आधार पर विज्ञान उस विषय पर भविष्यवाणी कर सकता है। कार्यकारण के बाद में विश्वास पर ही विज्ञान की नींव टिकी हुई है। वैज्ञानिक यह मानता है कि क्या है के आधार पर क्या होगा का निश्चय किया जा सकता है। कार्यकारण का स्वरूप सार्वभौम और परिवर्तनीय है।

समाज मनोविज्ञान विज्ञान है (Social Psychology is a Science)

उपर्युक्त छः तत्वों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि समाज मनोविज्ञान में विज्ञान होने के निम्नलिखित तत्व हैं–

1. **समाज मनोविज्ञान तथ्यात्मक होता है** (Factuality)–वैज्ञानिक का तथ्य तथ्यात्मक होता है और इसी दृष्टि से समाज मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है; इस बात की पुष्टि होती है, क्योंकि समाज मनोविज्ञान मानव व्यवहार के सम्बन्ध में कोई नियामक निर्णय नहीं लेता बल्कि उसके निर्णय पूर्णतया वर्णात्मक होते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज मनोविज्ञान के निर्णय मूल्यात्मक न होकर तथ्यात्मक तथा तटस्थ होते हैं।

2. **समाज मनोविज्ञान की पद्धति वैज्ञानिक है** (Scientific Method)–समाज मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में प्रयोग की गयी सभी पद्धतियाँ वैज्ञानिक हैं क्योंकि समाज अधिकतर प्रयोगात्मक पद्धति का ही प्रयोग करता है तथा किसी विषय को नियन्त्रित परिस्थितियों में अध्ययन करने के लिए ही प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में भी व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन नियन्त्रित परिस्थितियों में ही किया जाता है। यह बात स्पष्ट है कि जितनी भी पद्धतियाँ समाज मनोविज्ञान में अपनायी जाती हैं। सभी पूर्णतया वैज्ञानिक नहीं हैं फिर भी उन पद्धतियों को अधिक-से-अधिक वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक रूप देकर ही प्रयुक्त करने का प्रयास किया जाता है, जिसमें काफी सरलता भी प्राप्त होती है। अतः यह बात स्पष्ट होती है कि समाज मनोविज्ञान की पद्धति वैज्ञानिक है।

3. **समाज मनोविज्ञान के सिद्धान्तों में सार्वभौमिकता होती है** (Universality)–समाज मनोविज्ञान द्वारा प्रतिपादित किये गये सिद्धान्त सभी देशों एवं कालों में एक समान रहते हैं। समाज मनोविज्ञान का यह सिद्धान्त है कि व्यक्ति जब अकेले में व्यवहार करता है तो उसका व्यवहार अलग होता है और भीड़ में उसका किया गया व्यवहार अलग होता है। यह एक सार्वभौम सिद्धान्त है अर्थात् भीड़ के व्यवहार और सकल के व्यवहार में प्रत्येक देश और काल में अन्तर अनिवार्य है।

4. **समाज मनोविज्ञान कार्यकारण सम्बन्धों की खोज** (Discovery of Cause Effect Relationship)–समाज मनोविज्ञान मानव व्यवहार के नियमों की खोज करके उनके आधार पर कार्य कारण सम्बन्धों की खोज करता है। इस तथ्य के आधार पर भी मनोविज्ञान का स्वरूप वैज्ञानिक है। यह सिद्ध होता है।

5. **समाज मनोविज्ञान के सिद्धान्त प्रमाणित होते हैं** (Principles of Social Psychology to be Verified)—मनोविज्ञान के सिद्धान्त पूर्णत: प्रमाणित होते हैं, क्योंकि उनका जब भी पुन: परीक्षण किया जाता है। वे सदैव ही सही सिद्ध होते हैं। अत: समाज मनोविज्ञान का वैज्ञानिक स्वरूप इस तथ्य द्वारा भी सिद्ध होता है।

6. **समाज मनोविज्ञान भविष्यवाणी करने में समर्थ होता है** (Social Psychology is Predictable)—समाज मनोविज्ञान कारण के आधार पर कार्य के विषय में भविष्यवाणी कर सकता है, क्योंकि यह कार्यकारण सम्बन्धों की खोज करता है। समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा वर्तमान में अनेक प्रगतिशील देश सामाजिक समस्याओं के सम्बन्ध में की गयी भविष्यवाणी के सहयोग से लाभ प्राप्त करते हैं। अत: इस आधार पर भी समाज मनोविज्ञान का स्वरूप वैज्ञानिक ही सिद्ध होता है।

उपर्युक्त अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि समाज मनोविज्ञान का स्वरूप वैज्ञानिक है और यह यथार्थ विज्ञान है। समाज मनोविज्ञान के प्रसंग में यह भौतिक विज्ञानों के समान नहीं है। यह बात ध्यान रखने योग्य है कि प्रत्येक विज्ञान की यथार्थता का सम्बन्ध उसकी विषय-वस्तु से होता है और समाज मनोविज्ञान की विषय-वस्तु है—समाज में होने वाले व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन। समाज के व्यवहार का यथार्थ वैज्ञानिक अध्ययन निश्चय ही भौतिक विज्ञानों से भिन्न होगा। अत: यहाँ यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि समाज मनोविज्ञान को यथार्थ विज्ञान कहते हैं। इस समय इसकी यथार्थता की सीमाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है तभी इसका वास्तविक स्वरूप बना रहेगा।